राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान

(मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार के तत्वाधान में संचालित)

वार्षिक प्रतिवेदन
1987-88

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान
ए-40, विशाल इन्क्लेव, राजा गार्डन
नई दिल्ली - 27

प्रथम अध्याय

परिचय

केन्द्रीय संस्कृत परिषद् की अनुशंसा के फलस्वरूप देश में संस्कृत के विकास एवं उन्नति के लिए सोसायटी रजिस्ट्रेशन एक्ट xx। 1860 के अन्तर्गत स्वायत्त शासी संस्था के रूप में सन् 1970 में राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान की स्थापना हुई। संस्कृत भाषा के प्रचार एवं विकास के लिए एक शीर्षस्थ संस्था के रूप में यह कार्य कर रहा है। सन् 1956 में संस्कृत भाषा एवं शिक्षण के विभिन्न क्षेत्रों में प्रचार, प्रसार एवं प्रगति के लिए मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार, द्वारा निर्मित संस्कृत आयोग की विभिन्न संस्तुतियों के समुचित कार्यान्वयन भी इसके महत्वपूर्ण कार्य क्षेत्र हैं।

जैसा कि मेमोरेन्डम ऑफ एसोसिएशन से स्पष्ट है कि राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान का प्रमुख उद्देश्य संस्कृत शिक्षा एवं शोध का विकास, प्रचार एवं प्रोत्साहन करना है। साथ ही अधिगृहीत केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठों की प्रबन्ध व्यवस्था के लिए केन्द्रीय, प्रशासकीय एवं सहयोग स्थापित करने वाली संस्था के रूप में कार्य करना भी इसका उद्देश्य है।

कार्यक्रम और क्रियाकलाप

उद्देश्यों की पूर्ति हेतु संस्थान को निम्न निर्दिष्ट कार्यक्रमों एवं क्रियाकलापों को पूरा करना होता है:

देश के विभिन्न भागों में संस्कृत के अध्ययन-अध्यापन की व्यवस्था करना।

स्नातक, स्नातकोत्तर एवं विद्यावारिधि (पी॰एच॰डी॰) स्तर पर प्राचीन पद्धति द्वारा संस्कृत का अध्यापन-कार्य सम्पादित करना।

---2/-

स्नातक तथा स्नातकोत्तर स्तर पर अध्यापकों का प्रशिक्षण-कार्य संचालन करना ।

अथवा

अध्यापक-प्रशिक्षण एवं शोध की उपाधियों के साथ ही सेकेण्डरी, स्नातक एवं स्नातकोत्तर कक्षाओं के स्तर की परीक्षाओं का संचालन करना ।

संस्कृत वाङ्मय के विभिन्न क्षेत्रों में शोध कार्य का संचालन करना ।

परस्पर अभिरूचि वाली अन्य संस्थाओं के साथ सहयोग स्थापित करना ।

संस्कृत की पाण्डुलिपियों का संग्रह एवं पुस्तकालयों का निर्माण-कार्य सम्पन्न करना ।

महत्वपूर्ण एवं दुर्लभ पाण्डुलिपियों का प्रकाशन एवं सम्पादन करना ।

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान अन्तर्राष्ट्रिय संस्कृत-शिक्षा-संगठन की भारतीय शाखा के रूप में कार्य करता है तथा विदेश में स्थित, प्राच्य विद्या एवं शिक्षा केन्द्रों के साथ सांस्कृतिक-कार्यक्रम-विनिमय का क्रियान्वयन करता है ।

अध्यापन

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान के अंगभूत आठ विद्यापीठों में से सात में संस्थान द्वारा तैयार किए गए पाठ्य-विवरण के आधार पर शास्त्री एवं आचार्य कक्षाओं तक अध्यापन-कार्य सम्पन्न किया जाता है ।

ऐच्छिक संगठनों द्वारा संचालित और संस्थान से सम्बद्ध संस्कृत विद्यालयों में भी उसी पाठ्य-विवरण के अनुसार अध्यापन-कार्य होता है ।

इन सभी विद्यापीठों में +2 स्तर का द्विवर्षीय मध्यवर्ती पाठ्यक्रम, जिसे प्राकशास्त्री कहा जाता है, में उन छात्रों को प्रवेश की सुविधा प्रदान की गई है जो कि अपारम्परिक विधि से पढ़कर संस्थान द्वारा स्वीकृत परम्परागत संस्कृत-शिक्षा पद्धति से अध्ययन हेतु आते हैं । इसके साथ ही दो विद्यापीठों में 10+2 विधि को माध्यमिक स्तर पर अपनाया गया है । ये कक्षायें हमारी स्नातक-कक्षाओं के लिए पोषक का काम करती हैं ।

शिक्षकों का प्रशिक्षण

आठ में से सात विद्यापीठों में प्रायोगिक शिक्षण पर विशेष बल देते हुए एक वर्षीक शिक्षक-प्रशिक्षण दिया जाता है । सत्रान्त में बी॰एड॰के समकक्ष शिक्षाशास्त्री की उपाधि प्रदान की जाती है । दो विद्यापीठों में स्नातकोत्तर स्तर पर एम॰एड॰के समकक्ष शिक्षाचार्य की उपाधि के लिए भी शिक्षक-प्रशिक्षण दिया जाता है ।

शोध

सभी विद्यापीठों में छात्रों को शोधकार्य हेतु प्रवेश की सुविधा प्रदान की गई है जबकि एक विद्यापीठ संस्कृत के चुने हुए विषयों पर केवल शोध के उद्देश्य से ही संचालित किया गया है । सफलतापूर्वक शोध-कार्य की समाप्ति हो जाने पर शोध-छात्रों को विद्यावारिधि की उपाधि प्रदान की जाती है जो पीएच॰डी॰के समकक्ष मानी जाती है ।

प्रकाशन

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान "संस्कृत विमर्श" "शोध-प्रभा" और गंगानाथ झा रिसर्च जर्नल" नाम की तीन वार्षिक सम्मानित पत्रिकाओं को प्रकाशित करता है जिनमें प्रथम जर्नल का प्रकाशन संस्थान स्वयं करता है और अन्य

दो क्रमशः श्री लालबहादुर शास्त्री केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली एवं श्री गंगानाथ झा केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ, इलाहबाद द्वारा प्रकाशित किये जाते हैं । इसके साथ ही समुचित सम्पादकीय विचारों एवं टीकाओं के साथ दुर्लभ पाण्डुलिपियों का क्रमशः प्रकाशन भी इस विद्यापीठ ने हाथ में लिया है ।

सांस्कृतिक कार्यक्रम विनिमय एवं सहयोग

सांस्कृतिक विनिमय के सम्बन्ध में भारत सरकार द्वारा बाहर के देशों के साथ निश्चय किए गए सहमति पत्र के नियमानुसार, संस्थान विदेशों में संस्कृत शिक्षण के विभिन्न केन्द्रों पर संस्कृत के विद्वानों को प्रेषित करता है और इन स्थानों में विद्वानों को आमंत्रित करता है । इसके अतिरिक्त संस्थान अन्तर्राष्ट्रिय सम्मेलनों तथा संगोष्ठियों में सक्रिय रूप से भाग लिया करता है । संस्थान ऐसे अन्तर्राष्ट्रिय संगठनों के साथ मिलजुल कर कार्य करता है जिसके उद्देश्य संस्थान के उद्देश्यों के सदृश होते हैं ।

स्वरूप एवं प्रशासन

सामान्य या साधारण सभा संस्थान की नीति निर्धारण करने वाली समिति है । शिक्षा मंत्री इसके अध्यक्ष होते हैं । संस्थान की साधारण-सभा के सदस्यों को परिशिष्ट "क" में प्रदर्शित किया गया है ।

शासी परिषद् राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान की कार्यकारिणी परिषद् है । शिक्षा मंत्री इसके अध्यक्ष हैं और शिक्षा राज्य मन्त्री इसके उपाध्यक्ष । इनके अतिरिक्त पांच और सदस्य हैं जिनमें वित्त

सलाहकार (शिक्षा मंत्रालय) और उप-शिक्षा सलाहकार (संस्कृत) पदेन सदस्य के रूप में सम्मिलित हैं । वर्तमान वित्तीय-वर्ष के लिए शासी परिषद् का गठन परिशिष्ट "ख" में दिया गया है । शासी परिषद् को निम्नलिखित समितियों की सहायता प्राप्त है:-

1- अर्थ-समिति 2- विद्या-परिषद् 3- परीक्षा-समिति
4- शोध-समिति 5- प्रकाशन-समिति

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान में चार अनुभाग काम करते हैं: शैक्षणिक अनुभाग, परीक्षा, प्रशासन और वित्त । शैक्षणिक की तीन शाखाएँ हैं- शैक्षणिक, शोध एवं प्रकाशन और पत्राचार पाठ्यक्रम । परीक्षा अनुभाग को छोड़कर प्रत्येक अनुभाग एक-एक उप-निदेशक के निर्देशन में काम करता है । परीक्षा अनुभाग एक उप-नियंत्रक (परीक्षा) की देखरेख में कार्य करता है । ये सभी अधिकारी संस्थान के निदेशक के कार्यों में सहायता करते हैं जो प्रमुख कार्याधिकारी होता है और साधारण-सभा द्वारा अनुमोदित कार्यक्रमों एवं नीतियों के क्रियान्वयन के लिए उत्तरदायी होता है ।

संस्थान के निदेशक की नियुक्ति भारत सरकार द्वारा की जाती है । इस सत्र में डा० मण्डन मिश्र ने निदेशक के रूप में कार्य किया ।

शैक्षणिक अनुभाग

डा० मधुसूदन मिश्र के निर्देशन में कार्यरत यह अनुभाग शैक्षिक गतिविधियों को बनाए रखने, शैक्षिक कार्यक्रमों, कलेण्डर के निर्माण एवं विभिन्न पाठ्यक्रमों के लिए पाठ्य-विवरण तैयार करने के लिए

उत्तरदायी हैं । इसके अतिरिक्त छात्रवृत्ति तथा संस्थाओं को सम्बद्धता प्रदान करने के कार्यों से भी शैक्षणिक विभाग का ही सम्बन्ध होता है ।

शोध एवं प्रकाशन एकक

श्री सम्पतनारायण,उप-निदेशक शोध एवं प्रकाशन के नेतृत्व में कार्यरत यह एकक शोध एवं प्रकाशन के कार्यक्रमों का कार्यान्वयन करता है तथा विद्यापीठों और संस्थान के शोध एवं प्रकाशन की गतिविधियों के साथ सहयोग स्थापित करता है ।

पत्राचार पाठ्यक्रम एकक

डा० काशीनाथ तिवारी-उप-निदेशक के निर्देशन में संचालित यह एकक पत्राचार पाठ्यक्रम आयोजित करने के लिए उत्तरदायी है । ये पाठ्यक्रम सम्प्रति दो स्तरों पर संचालित हैं:-

1- संस्कृत का प्रारम्भिक पाठ्यक्रम{प्रथम वर्ष}{हिंदी एवं अंग्रेजी के माध्यम से}

2- संस्कृत का प्रारम्भिक पाठ्यक्रम{द्वितीय वर्ष}{हिंदी और अंग्रेजी माध्यम से}

परीक्षा अनुभाग

परीक्षा अनुभाग का संचालन श्री मुरारीलाल शर्मा की देखरेख में होता है और इसे श्री सुबोध चन्द्र पन्त का सहयोग प्राप्त है । यह अनुभाग वार्षिक एवं पूरक निम्नलिखित कई स्तर की परीक्षाओं का संचालन करता है:-

प्रथमा,उत्तरमध्यमा, शास्त्री, शिक्षाशास्त्री, पूर्वमध्यमा, प्राकशास्त्री, आचार्य, शिक्षाचार्य ।

यह केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठों के छात्रों को शोध की उपाधि देता है ।

प्रशासन अनुभाग

श्री के•बी•चौबे के नेतृत्व में यह अनुभाग सभी विद्यापीठों एवं संस्थान के सामान्य प्रशासन का संचालन करता है । संस्थान एवं विद्यापीठों के अधिकारियों और कर्मचारियों की व्यवस्था करना और सभी विद्यापीठों पर नियंत्रण आदि इस अनुभाग का प्रमुख उत्तर-दायित्व है ।

वित्त एवं लेखा अनुभाग

श्री त्रिलोकीनाथ धर-के निर्देशन में संचालित इस अनुभाग का प्रमुख कार्य आय-व्यय का विवरण तैयार करना,अनुदान की प्राप्ति तथा उसका वितरण, वित्तीय व्यवस्था और वार्षिक लेखा-जोखा तैयार करना है । यह अनुभाग अंश-निधि की भी व्यवस्था करता है तथा शिक्षा मन्त्रालय की व्यवस्था के अंतर्गत छात्रवृत्ति की धनराशि का भी वितरण करता है ।

विद्यापीठ

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान ने अभी तक आठ केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठों की स्थापना की है । उनके नाम और स्थान नीचे दिये जा रहे हैं:-

——8/-

क्र॰सं॰	विद्यापीठ का नाम	स्थान
1॰	श्री लालबहादुर शा॰ केन्द्रीय संस्कृत विद्यापी॰	नई दिल्ली
2॰	केन्द्रीय संस्॰ विद्यापीठ	तिरूपति
3॰	श्री रणवीर केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ	जम्मू
4॰	श्री सदाशिव केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ	पी
5॰	श्री गंगानाथ झा केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ	इ॰
6॰	गुरूवायूर केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ,पुरानाट्टकरा	केरल
7॰	केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ	जयपुर
8॰	केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ	लखनऊ

उपर्युक्त विद्यापीठ निम्न-निर्दिष्ट पाठ्यक्रमों में अध्यापन-कार्य सम्पन्न कराते हैं:-

क्र॰सं॰	पाठ्यक्रम	समकक्ष
1॰	प्रथमा	मिडिल
2॰	पूर्वमध्यमा	सेकेण्डरी
3॰	उत्तरमध्यमा/प्राकशास्त्री	सीनियर सकेण्डरी
4॰	शास्त्री	बी॰ए॰
5॰	आचार्य	एम॰ए॰

6॰	शिक्षाशास्त्री	बी॰एड॰
7॰	शिक्षाचार्य	एम॰एड॰
8॰	विद्यावारिधि	पीएच॰डी॰

द्वितीय अध्याय

शैक्षणिक विभाग

जैसा कि प्रथम अध्याय में कहा गया है, यह अनुभाग एक उप-निदेशक की देखरेख में चलता है । प्रकृत वर्ष में इस अनुभाग में निम्नलिखित पदाधिकारी कार्यरत थे:-

एक अनुभाग अधिकारी, एक असिस्टेंट, एक यू॰डी॰सी॰
एक एल॰डी॰सी॰, एक चतुर्थ वर्ग कर्मचारी

अनुभाग अधिकारी शोध और प्रकाशन विभाग के प्रशासन और वित्त सम्बन्धी कार्य को भी देखते हैं ।

इस अनुभाग के अन्दर निम्नलिखित कार्यकलाप हैं:-

क- पाठ्यक्रम निर्माण

संस्थान की शैक्षिक क्रियाओं की व्यवस्था करने वाला यही अनुभाग है । विभिन्न कक्षाओं के लिए पाठ्यक्रम का निर्माण मुख्य कार्य है जिस पर सारे शैक्षणिक कार्य आधारित हैं ।

प्रथमा से आचार्य तक के संस्कृत विषयों के पाठ्यक्रम बनाने के लिए समितियाँ अलग-अलग तदर्थ रूप से बनाई

जाती हैं । यह एक अध्ययन परिषद् को सुपुर्द किया जाता है जिसका गठन भी तदर्थ रूप से ही संशोधन के लिए आवश्यकतानुसार होता है । जहाँ तक अंग्रेजी, हिंदी तथा इतिहास आदि आधुनिक विषयों का प्रश्न है, केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद् का केन्द्रीय विद्यालय वाला पाठ्यक्रम ले लिया जाता है ।

प्रान्तीय भाषाओं के लिए राज्य शिक्षा परिषद् के पाठ्यक्रम को लेलिया जाता है । शास्त्री कक्षा के लिए हिंदी, अंग्रेजी और आधुनिक विषयों का पाठ्यक्रम वही है जो दिल्ली विश्वविद्यालय में चलता है । शास्त्री कक्षा के लिए प्रान्तीय भाषाओं का पाठ्यक्रम उन-उन राज्यों के मुख्य विश्वविद्यालयों के अनुसार होता है ।

प्रकृत वर्ष में 1985-86 में छपे पाठ्यक्रम में जो कुछ संशोधन किया गया है और जिसके अनुसार 1987 की वार्षिक परीक्षा हुई उसी का प्रयोग किया गया है ।

ख॰ छात्रवृत्ति

छात्रवृत्ति एकक के दो विभाग हैं । एक एकक विद्यापीठों की छात्रवृत्ति से सम्बन्ध रखता है । यह तो विद्यापीठों को दी गयी छात्रवृत्ति राशि के अनुसार चलता है । 1987-88 में जो छात्रवृत्ति दी गयी उसकी रूपरेखा निम्नलिखित है:-

---11/-

विद्यापीठ	छात्रवृत्ति पाने वालों की संख्या
केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ	
दिल्ली	509
तिरूपति	144
इलाहबाद	22
पुरी	335
जम्मू	232
गुरूवायर	132
जयपुर	131
लखनऊ	79

छात्रवृत्ति की दूसरी शाखा मंत्रालय के द्वारा दी जाने वाली दो योजनाओं से सम्बन्ध रखती हैं:-

1- पारम्परिक छात्रों की शोध छात्रवृत्ति

2- मैट्रिक के बाद की छात्रवृत्ति

1987-88 में प्रदत्त छात्रवृत्ति की रूपरेखा निम्नलिखित है:-

कक्षा	छात्रवृति पाने वालों की संख्या
आचार्य	116
एम॰ए॰	74
विद्यावारिधि	60
पी॰एच॰डी॰	51

---12/-

प्रवेश

अनेक संस्कृत परीक्षण संस्थाओं की परीक्षाओं की समकक्षता को ध्यान में रखते हुए संस्कृत छात्रों का प्रवेश संस्थान के अधीनस्थ विद्यापीठों में अगली कक्षा में होता है । 1987-88 में केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठों में प्रवेश की रूपरेखा निम्नलिखित है:-

विद्यापीठ	छात्र संख्या
तिरूपति	217
दिल्ली	770
इलाहबाद	45
पुरी	391
जम्मू	298
गुरूवायूर	181
जयपूर	191
लखनऊ	132

इसमें सम्बद्ध संस्थाओं के छात्रों को नहीं सम्मिलित किया गया है । छात्रों की निम्नलिखित संख्या को छात्रवृत्ति की सुविधा उपलब्ध है:-

दिल्ली	90
तिरूपति	135
इलाहबाद	0
पुरी	152

—13/—

जम्मू	57
गुरूवायूर	0
जयपूर	52
लखनऊ	12

घ. संस्थाओं की सम्बद्धता

संस्थान का आरम्भ कुछ केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठों से हुआ था । बाद में कुछ स्वतंत्र संस्थाओं को सम्बद्ध कर लिया गया । इन संस्थाओं की संख्या क्रमशः बढ़ती गई है । सम्बद्ध संस्थाओं की सूची अनुबन्ध "ग" पर है ।

इन संस्थाओं को केवल प्रथमा से आचार्य तक की सम्बद्धता दी जाती है । शिक्षाशास्त्री और शिक्षाचार्य की सम्बद्धता इन्हें अब बन्द कर दी गई है । ये अब केवल केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठों तक सीमित हैं ।

ङ- शास्त्रचूड़ामणि

अनुभवी और अवकाश प्राप्त विद्वानों को जो प्राचीन शास्त्र में निष्णात हैं, केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठों में अध्यापकों तथा शोध छात्रों के मार्गदर्शन के लिए नियुक्त किया जाता है । प्रकृत वर्ष में उन-उन विद्यापीठों में ऐसे विद्वानों की संख्या निम्नलिखित थी:-

——14/—

विद्यापीठ	संख्या	नयी नियुक्ति	सेवा वृद्धि
दिल्ली		—	3
तिरुपति		—	—
इलाहबाद		—	1
पुरी		—	3
जम्मू		—	1
गुरुवायूर		—	—
जयपुर		1	3
लखनऊ		2	—

तृतीय अध्याय

शोध और प्रकाशन एकक

शोध और प्रकाशन विभाग का संचालन आजकल एक उप-निदेशक के द्वारा होता है ।

प्रकृत वर्ष में इसमें निम्नलिखित अधिकारी/कर्मचारी कार्यरत थे:-

एक शोध सहायक
एक यू·डी·सी·
एक एल·डी·सी·

यह एकक केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ और संस्थान मुख्यालय के प्रकाशनों और शोध में सामंजस्य स्थापित करता है ।

प्रस्तुत वर्ष में प्रकाशन समिति की बैठक एक बार हुई । विद्यापीठ और मुख्यालय के प्रकाशनों को स्वीकृति दी गई । अर्द्धवार्षिक शोध-पत्रिका "संस्कृत विमर्श" का 15वां खण्ड इस साल प्रकाशित हुआ । दिल्ली और इलाहबाद विद्यापीठ की शोध-पत्रिकायें क्रमश: शोध प्रभा और गंगानाथ झा रिसर्च जनरल का भी प्रकाशन हुआ । मुख्य प्रकाशनों की सूची निम्नलिखित है:-

1- शारदालिपि दीपिका
2- परिभाषेन्दुशेखर-पुनर्मुद्रण
3- कात्यायन यज्ञ पद्धति विमर्श:
4- रिसर्च मैथोडोलोजी
5- वैदिक सिद्धान्त (संस्कृत हिन्दी)
6- संस्कृत साहित्य सुधा (अंग्रेजी-संस्कृत)
7-

फोर्ड फाउण्डेशन की वित्तीय सहायता से संस्थान ने दो योजनाओं को अपने हाथ में लिया है । वे हैं:- 1- हू इज़ हू-जिसमें परम्परागत विद्वानों की सूची तैयार की जाती है 2- मौखिक शास्त्र परम्परा की टेप रिकार्डिंग ।

हू इज़ हू परियोजना

संस्थान ने इस योजना को अप्रैल 86 से लिया । प्रस्तुत वर्ष में देश के विभिन्न भागों में 70 व्यक्ति सूचना इकट्ठा करने के लिए भेजे गए । छपे हुए पत्र और मार्गदर्शक पत्र तथा प्रश्नावली सभी विश्वविद्यालयों, वैदिक विद्वानों और संस्थाओं के पास भेजे गये । प्रचार के अन्य माध्यमों से भी सूचनायें दी गईं । अब तक लगभग

1 हजार प्रपत्र भरकर प्राप्त हो चुके हैं । संग्रहीत सामग्री की प्रेस कापी तैयार की जा रही है ।

मौखिक शास्त्रीय परम्परा की टेप रिकार्डिंग

इस योजना का कार्यक्रम तिरुपति विद्यापीठ में बन रहा है । इस वर्ष 19 विद्वानों ने मीमांसा और न्याय शास्त्र के विभिन्न विषयों पर अपने व्याख्यान दिए । 145 खण्डों की रिकार्डिंग में 53 विषयों का समावेश हुआ । न्याय की रिकार्डिंग भी अभी चल रही है । रिकार्ड किये हुए व्याख्यानों की प्रेस कापी तैयार हो गई है ।

काश्मीर शैव-दर्शन-कोश-योजना

इस योजना का संचालन जम्मू विद्यापीठ में हो रहा है । प्रेस के लिए स्वच्छ पत्र तैयार किये जा रहे हैं । सितम्बर 1989 तक इसके समाप्त होने की उम्मीद है ।

1987-88 सत्र में शोध-समिति की बैठक एक बार हुई । इस बैठक में 85 शोध छात्रों का विद्यावारिधि के लिए पंजीयन हुआ । 27 विद्वानों को विद्यावारिधि उपाधि इस वर्ष दी गई । 45 विद्वानों ने अपने शोध-प्रबन्ध प्रस्तुत किये । 6 सप्ताह का प्राग शोध-पाठ्यक्रम दिल्ली विद्यापीठ में चलाया गया । लगभग 100 शोध छात्रों ने अनेक विद्यापीठों से आ कर इसमें भाग लिया । विख्यात विद्वानों ने अनेक विषयों पर भाषण दिए ।

चतुर्थ अध्याय

पत्राचार पाठ्यक्रम

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान ने शैक्षिक विभाग के अन्तर्गत अलग से संस्कृत सिखाने का एक एकक स्थापित किया है । दस वर्षों से भी अधिक समय से यह अनुभाग पत्राचार द्वारा हिंदी और अंग्रेजी माध्यम से प्रारम्भिक स्तरों पर संस्कृत भाषा सिखाने का कार्य कर रहा है । यह पाठ्यक्रम दो स्तरों पर है । प्रत्येक, 21 पाठों में विभक्त है और दो वर्षों में पत्राचार के माध्यम से पूरा किया जाता है । प्रतिमास दो पाठ पंजीकृत छात्रों के लिये प्रेषित किये जाते हैं । पाठों का अध्ययन कर लेने के पश्चात् संस्कृत शिक्षार्थियों से यह आशा की जाती है कि वे प्रत्येक पाठ के अंत में संलग्न उत्तर पुस्तिका में प्रश्नों का उत्तर लिखें । सभी छात्र उत्तर पुस्तिकाओं को संस्थान मुख्यालय में वापस भेजते हैं जहाँ मूल्यांककों के द्वारा उसका मूल्यांकन किया जाता है और अंत में मूल्यांकित उत्तर पुस्तिकाएँ छात्रों को मार्गदर्शन हेतु भेज दी जाती हैं ।

वर्ष 1987 में जनवरी से दिसम्बर तक दोनों पाठ्यक्रमों में 1411 छात्रों ने प्रवेश लिया था जिसका विवरण निम्नलिखित है:-

प्रथम वर्ष	छात्रों की संख्या
हिन्दी माध्यम	459
अंग्रेजी माध्यम	650

द्वितीय वर्ष

हिन्दी माध्यम	105
अंग्रेजी माध्यम	187
कुल	1411

चूँकि संस्थान के अंगीभूत केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ सम्पर्क बिन्दु के रूप में कार्य कर रहे हैं इसलिए यह निश्चय किया गया है कि संस्कृत शिक्षार्थियों से सम्पर्क स्थापित करने के लिए वही विद्यापीठ केन्द्र होंगे जहाँ पर मण्डल भर के शिक्षार्थी अध्यापकों से आमने-सामने सम्पर्क कर सकेंगे और उनके समक्ष आने वाली कठिनाइयों का निवारण हो सकेगा ।

इस पाठ्यक्रम का निःशुल्क संचालन किया जाता है किन्तु यह निश्चय करने के लिए कि वस्तुतः वास्तविक शिक्षार्थी ही प्रविष्ट किये गये हैं, नाममात्र के लिए भारतीय छात्रों से पन्द्रह रूपये और विदेशी छात्रों से दस अमरीकी डालर शुल्क के रूप में लिया जाता है । इन पाठ्यक्रमों को और अधिक महत्व प्रदान करने के लिए तथा अधिक से अधिक शिक्षार्थियों को यह सुविधा प्रदान कराने के लिये संस्थान के द्वारा बहुत से महत्वपूर्ण कदम उठाये गये हैं । डी॰ए॰वी॰पी॰निदेशक के माध्यम से इस पाठ्यक्रम का विज्ञापन किया जाता है । दूतावासों को भी पत्र भेजा गया है । भारतवर्ष के विश्वविद्यालय के उप-कुलपतियों को भी प्रचार-प्रसार हेतु सूचनायें प्रेषित की गई हैं । इस प्रकार के प्रयत्नों के फलस्वरूप युवा छात्रों के अतिरिक्त विभिन्न आयु वर्ग के लोगों ने भी इस पाठ्यक्रम में प्रवेश लिया है और अध्ययन कर रहे हैं ।

जो शिक्षार्थी इन पाठ्यक्रमों को सफलतापूर्वक पूरा कर लेते हैं, उन्हें संस्कृत प्रवेश नामक एक प्रमाण-पत्र दिया जाता है ।

अध्याय-5

परीक्षा विभाग

परीक्षा विभाग के मुख्य अधिकारी उप-नियंत्रक (परीक्षा) हैं जिनके नीचे दो और अधिकारी हैं । संस्थान को विभिन्न परीक्षाओं में छात्रों की योग्यता का परीक्षण इसके द्वारा होता है । प्रथमा से आचार्य तक की तथा शिक्षाशास्त्री और शिक्षाचार्य और विद्यावारिधि परीक्षा भी संस्थान द्वारा संचालित होती है । इन परीक्षाओं में अंगीभूत विद्यापीठ तथा सम्बद्ध संस्थाओं के छात्र सम्मिलित होते हैं । विद्यापरिषद् द्वारा दिए गए मार्गदर्शन के आधार पर ही पाठ्यक्रम के अनुसार यह परीक्षायें होती हैं । परीक्षा के विभिन्न मामलों को देखने के लिए परीक्षा-समिति के अंतर्गत छोटी-छोटी समितियाँ हैं जो इन परीक्षाओं का संचालन देखती हैं ।

संस्थान की विद्यावारिधि उपाधि प्राप्त करने के लिए 29 छात्रों ने अपने शोध-प्रबन्ध प्रस्तुत किये । 1987-88 सत्र में उनकी वाक्-परीक्षा हुई और विभिन्न विषयों पर विद्यावारिधि उपाधि प्रदान की गयी ।

जिन छात्रों ने 1987-88 की परीक्षायें पास की उनका विवरण नीचे है:-

क्र.सं.	कक्षा	पंजीयन	प्रविष्ट	पास	प्रतिशत
1.	प्रथमा-तृतीय	137	124	73	58.87
2.	पूर्वमध्यमा-प्रथम	235	222	165	74.33
3.	,, द्वितीय	118	105	92	87.61
4.	उत्तरमध्यमा-प्रथम	121	89	74	83.14
5.	,, द्वितीय	50	38	24	63.15
6.	प्राकशास्त्री-प्रथम	390	329	292	88.75
7.	,, द्वितीय	257	243	187	76.95
8.	शास्त्री-प्रथम	488	447	327	73.15
9.	,, द्वितीय	348	337	244	72.40
10.	,, तृतीय	314	303	230	75.90
11.	आचार्य-प्रथम	488	430	324	74.82
12.	,, द्वितीय	290	278	253	91.00
13.	शिक्षाशास्त्री	778	778	676	86.88
14.	शिक्षाचार्य	17	17	15	88.23
	कुल	4031	3740	2976	79.5

षष्ठ अध्याय

प्रशासन विभाग

यह विभाग एक उप-निदेशक के अधीन संचालित होता है । प्रकृत वर्ष में यहाँ निम्नलिखित अधिकारी कार्यरत थे:-

एक अनुभाग अधीक्षक
तीन असिस्टेंट
तीन यू.डी.सी.
छः एल.डी.सी.
एक आशुलिपिक

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान के मुख्यालय में प्रशासन विभाग नियमानुसार कार्यालय को व्यवस्थित ढंग से चलाने का कार्य करता है । यह केन्द्रीय विद्यापीठों को वे सारी सुविधाएँ प्रदान करता है जिससे वे सुचारू रूप से चल सकें । इसका मुख्य कार्यक्षेत्र है-सामान्य प्रशासन, व्यवस्था, सेवा और आपूर्ति, भूमि और मकान की प्राप्ति, केन्द्रीय विद्यापीठों की स्थापना तथा शासी परिषद् और साधारण सभा की बैठकें बुलाना ।

जिन विद्यापीठों के पास अपना भवन नहीं है उनके निर्माण के लिए ज़मीन प्राप्त करने का यत्न किया जा रहा है । इस सम्बन्ध में श्री रणवीर केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ, जम्मू के भवन-निर्माण के लिए भैलवाल में कुछ ज़मीन खरीदी गई है । इस ज़मीन पर चारदीवारी खड़ी करने का काम जारी है । पूरी विद्यापीठ के भवन-निर्माण के लिए उड़ीसा सरकार ने कुछ ज़मीन भुवनेश्वर में दी है । इस ज़मीन

को विद्यापीठ के नाम पंजीयन करने के लिए बातचीत जारी है । ज़मीन के पंजीयन के तुरंत बाद ही भवन-निर्माण का कार्य शुरू हो जायेगा । जयपुर और लखनऊ विद्यापीठ के लिए भी ऐसा कार्य किया जा रहा है जिनके लिए वहाँ की सरकारों ने ज़मीन दे दी है ।

अभी संस्थान के अधीन आठ विद्यापीठ हैं । पश्चिमबंगाल में कलकत्ता में एक केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ स्थापित करने की बात चल रही है। 1·79 एकड़ ज़मीन भवन-निर्माण के लिये राज्य सरकार ने दी है । विद्यापीठ का संचालन जल्दी ही होने वाला है ।

धर्म समाज संस्कृत महाविद्यालय के अधिग्रहण की भी बात मंत्रालय में जोर-शोर से चल रही है ।

अध्याय-7

वित्त और लेखा विभाग

इस विभाग का संचालन उप-निदेशक (वित्त) करते हैं और उनके अधीन एक अनुभाग अधिकारी, एक सहायक, एक यू॰डी॰सी॰ और चार एल॰डी॰सी॰ हैं । इस विभाग के क्रियाकलाप निम्नलिखित हैं:-

क- अंगीभूत विद्यापीठों से बजट एस्टीमेट प्राप्त करना और संस्थान का मुख्य बजट तैयार करना जिसकी स्वीकृति मानव संसाधन विकास मंत्रालय से ली जाती है ।

ख- मुख्यालय के वार्षिक लेखे की तैयारी तथा संस्थान और अंगीभूत विद्यापीठों के सम्मिलित वार्षिक लेखे की तैयारी ।

इन लेखाओं की परीक्षा हो जाने पर और डी॰एस॰ए॰आर॰के द्वारा सर्टिफिकेट प्राप्त हो जाने पर मंत्रालय को लेखे प्रस्तुत किये जाते हैं जो इसे पार्लियामेंट में रखते हैं ।

ग- व्यय का नियंत्रण:- इसके लिए विद्यापीठों से समय-समय पर खर्च का ब्यौरा प्राप्त किया जाता है ।

घ- वेतन-बिल तैयार करना, मैडिकल बिल तथा फैस्टीवल एडवांस, हाउस बिल्डिंग एडवांस और कन्वेन्स एडवांस के सम्बन्ध में बिल तैयार करना, कन्वेन्स की खरीद के लिए एडवांस की स्वीकृति; प्रोविडेन्ट फण्ड एकाउन्ट से एडवांस तथा अंतिम विड्राल आदि के लिए स्वीकृति प्रदान करना ।

ङ- कैश बुक, लेज़र एकाउण्ट, अनेक एडवांस के लिए रजिस्टर, पी॰बी॰आर॰फण्ड ब्रोंटशीट तथा व्यक्तिगत लेखा-मिशनों के सम्बन्ध में हिसाब-किताब रखना ।

च- इन्कम टैक्स का निर्धारण, फण्ड एकाउन्ट पर ब्याज । लीव सैलरी और पेंशन कन्ट्रीब्यूशन सम्बन्धी ब्याज का निर्धारण ।

छ- प्रशासन विभाग से प्राप्त खरीद तथा अन्य बिलों का परीक्षण ।

ज- शैक्षणिक विभाग से प्राप्त किताबें और छपाई सम्बन्धी बिलों का भुगतान ।

झ- परीक्षा विभाग तथा पत्राचार पाठ्यक्रम विभाग से प्राप्त बिलों का परीक्षण ।

ञ- प्रशासन, परीक्षा, शैक्षणिक और पत्राचार पाठ्यक्रम विभाग में टिकटों पर खर्च होने वाले पैसों का नियंत्रण ।

त- अनेक एकाउण्ट जनरल और ओडिट डायरेक्टर से ओडिट रिपोर्ट की प्राप्ति ।

थ- ओडिट आब्जैक्शन का निर्णय इत्यादि ।

बजट

1985-87 से बचे हुए 42·06 लाख रूपये को अगले सत्र में समाविष्ट किया गया । मंत्रालय ने सब मिलाकर 304·74 लाख (जिसमें पिछले साल की बची हुई रकम भी सम्मिलित है) की स्वीकृति दी । इस साल वाली स्वीकृत रकम से यह दस गुना अधिक थी और पांच साल पहले स्वीकृत रकम से यह दूनी थी । यह रकम निम्नलिखित प्रकार से विनियोजित की गई:-

एक क	प्लान	नॉन प्लान	कुल
	(रूपये लाखों में)		
मुख्यालय	43·17	37·15	80·32
दिल्ली विद्यापीठ	1·00	58·52	59·52
तिरूपति विद्यापीठ	0·50	28·45	28·95
पुरी विद्यापीठ	—	34·02	34·02
इलाहबाद विद्यापीठ	2·50	20·75	23·25
जम्मू विद्यापीठ	1·00	25·94	26·94
गुरूवायूर विद्यापीठ	—	21·50	21·50
जयपुर विद्यापीठ	16·15	—	16·15
लखनऊ विद्यापीठ	13·95	—	13·95
कुल	78·27	226·33	304·60

इस रकम का भुगतान वेतन और अन्य भत्ते स्कालरशिप तथा अन्य व्यय मदों में हुआ । जयपुर और लखनऊ विद्यापीठ का खर्च प्लॉन की मद से हुआ और विशेष योजनायें, भवन-निर्माण तथा सम्पत्ति की खरीद प्लॉन के फण्ड से हुई । 25·18 लाख की बची हुई रकम अगले वर्ष के कुछ महीनों के लिए रख ली गई ।

लेखा

जहाँ तक लेखे की तैयारी और प्रस्तुत करने का प्रश्न है, संस्थान पीछे पड़ा हुआ था । फिर भी इस विभाग के प्रयत्नों से 86-87 तक के लेखे की प्रस्तुति समाप्त कर दी गई है । अंगीभूत विद्यापीठों का लेखा-परीक्षण और उसका सर्टीफिकेशन उन्हीं महालेखाकारों के द्वारा इसी साल हो चुका था । फिर भी सम्मिलित लेखे को प्रस्तुत करने में देर हुई जिसका लेखा-परीक्षा अगले वर्ष हो पाया । 86-87 का परीक्षित लेखा पार्लियामेंट में दोनों सदनों में इसी वर्ष प्रस्तुत कर दिया गया । परीक्षित रिसीट और पेमेंट लेखा अनुबंध "डी" पर रखा गया है ।

मैंटेनेंस

इस विभाग में वेतन और प्रोविडेंट फण्ड का ब्यौरा मुख्यालय के अधिकारियों और स्टॉफ मेम्बर्स के लिये रखा जाता है । वित्तीय-वर्ष समाप्त होते ही प्रत्येक व्यक्ति को उनके वार्षिक एनुअल प्रोविडेन्ट फण्ड का ब्यौरा बता दिया जाता है और उनका वेतन एलाउन्स तथा उनका ऐरियर समय पर दे दिया गया । चेयरमैन की स्वीकृति से संस्थान में शिक्षकों का वेतनमान रिवाइज़ कर दिया गया और उससे प्राप्त ऐरियर भी समय पर दे दिया गया ।

बिल का परीक्षण

प्रस्तुत वर्ष में 2965 बिल प्राप्त हुए हैं और परीक्षण के बाद इन स बिलों का भुगतान कर दिया गया ।

स्वीकृति प्रदान

1987-88 में अनेक मदों पर जैसे प्रोविडेंट फण्ड का एडवांस, गाड़ी खरीदने के लिये एडवांस और अनेक पर्वों पर लिये गये एडवान्स की स्वीकृ प्रदान की गई ।

ओडिट आब्जैक्शन

ओडिट आब्जैक्शन के निर्णय के लिये प्रयत्न जारी रहा । इस संबं में प्रत्येक विद्यापीठ को कहा गया कि समय पर ओडिट आब्जैक्शन का जवाब न आने से अभी तक बहुत से आब्जैक्शन अनिर्णीत अवस्था में ही प हुए हैं ।

आंतरिक परीक्षण

इंटरनल ओडिट के लिए जिस स्टॉफ की जरूरत है-उसकी स्वीकृति प्राप्त हुई है । फिर भी संस्थान आंतरिक परीक्षण के लिये अपने ही तर व्यवस्था करता रहा हैं और विद्यापीठ तथा मुख्यालय के प्रभाग अधिका के द्वारा यह कार्य सम्पन्न करता रहा है ।

मंत्रालय की छात्रवृत्तियाँ

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान मानव संसाधन विकास मन्त्रालय की ओर

छात्रवृत्ति की दो योजनाओं का संचालन करता है । 1-पहली योजना में उन छात्रों को छात्रवृत्ति दी जाती है जो मैट्रिक से ऊपर की कक्षाओं में संस्कृत पढ़ते हैं । दूसरी योजना में उन छात्रों को छात्रवृत्ति दी जाती है जो शास्त्री, आचार्य और विद्यावारिधि तक अपनी पढ़ाई करते हैं । इस योजना के अंतर्गत राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान को 9·50 लाख रूपये की रकम दी जाती है । 10·22 लाख की राशि जिसमें पिछले साल की बचत तथा विश्वविद्यालयों से प्राप्त लौटाई गई रकम भी सम्मिलित है, अनेक विश्वविद्यालयों को बांटी गई । केवल 4 हजार रूपये की राशि बच पाई है । अनेक कक्षाओं के लिये जो छात्रवृत्ति दी जाती है उसकी रकम इस प्रकार है:-

1- शास्त्री-बी·ए· 75रूपये प्रति मास दस महीने तक
2- आचार्य-एम·ए· 100 रूपये प्रतिमास दस महीने तक
3- विद्यावारिधि-पीएचडी· 300 रूपये प्रतिमास दो साल तक जिसमें प्रतिवर्ष 500 रूपये कन्टीजेंट भी दिया जाता है।

ह्यू इज़ ह्यू परियोजना

फोर्ड फाउण्डेशन द्वारा प्रदत्त सहायता से संचालित इस योजना की भी देखरेख यही विभाग करता है । वेतन, यात्रा-भत्ते आदि अन्य बिलों का भुगतान, जो इस योजना के अन्तर्गत हुआ, इस विभाग द्वारा किया गया ।

अध्याय-8

केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ, तिरूपति

1961 में शिक्षा मन्त्रालय, भारत सरकार के अधीन एक स्वायत्तशासी संस्था के रूप में केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ सोसायटी का पंजीयन हुआ था ।

जब विद्यापीठ को संस्थान के अधीन कर दिया गया तो 1970 में यह सोसायटी समाप्त हो गई । उस समय से यह राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान के अंगीभूत विद्यापीठ के रूप में चल रहा है ।

इसके अधीन अनेक विभाग हैं-जैसे शिक्षाशास्त्र ,शोध और प्रकाशन, आचार्य कक्षा, पुस्तकालय और पाण्डुलिपि विभाग, मौखिक शास्त्रीय परम्परा के अंतर्गत मीमांसा की टेप-रिकार्डिंग । इसके सिवाय वाद-विवाद प्रतियोगिता, विस्तार भाषण, यात्रा तथा प्रारंभिक चिकित्सा आदि अनेक क्रियाकलाप भी हैं । 1987-88 में विद्यापीठ के कार्यकलाप निम्नलिखित थे

1- 1987-88 में छात्रों का प्रवेश

क्र.सं.	कक्षा	प्रविष्ट छात्रों की संख्या	छात्रवृत्ति पाने वाले छात्रों की संख्या	छात्रावास रहने वाले छात्रों की
1.	प्रा.शा.प्रथम	9	9	6
2.	प्रा.शास्त्री-वर्ष	9	9	4
3.	शास्त्री-प्रथम	9	9	6
4.	शास्त्री-द्वितीय	7	6	1
5.	शास्त्री-तृतीय	8	8	4
6.	आचार्य-प्रथम	15	15	11
7.	आचार्य-द्वितीय	7	6	5
8.	शिक्षाशास्त्री	123	59	87
9.	शिक्षाचार्य	8	7	6
10.	विधिवारिधि	22	16	5
	कुल	217	144	135

—29/—

सन् 1988 के परीक्षाफल

क्र.सं.	कक्षा	प्रविष्ट होने वाले छात्रों की संख्या	उत्तीर्ण होने वाले छात्रों की संख्या
1.	प्रा.शा.-प्रथम	7	7
2.	,, द्वितीय	8	8
3.	शास्त्री-प्रथम	10	10
4.	,, द्वितीय	9	9
5.	,, तृतीय	7	7
6.	आचार्य-प्रथम	19	9
7.	,, द्वितीय	14	13
8.	शिक्षाशास्त्री	108	81
9.	शिक्षाचार्य	5	4

बैठकें

दिनांक 5-2-88 को महामहिम डा0 शंकर दयाल शर्मा-उप-राष्ट्रपति ने विद्यापीठ के वार्षिक दीक्षान्त-भाषण समारोह का उद्घाटन किया । उन्होंने विद्यापीठ के रजत जयन्ती समारोह के कार्यकलाप की भी अध्यक्षता की । प्रो0 किरीट जोशी विशेष शिक्षा सचिव तथा डा0 मण्डन मिश्र-निदेशक भी उपस्थित थे । सामान्य निरूक्ति विवेचन तथा श्री रामानुज चरित चम्पूकाव्य का विमोचन भी इसी अवसर पर हुआ ।

विस्तार भाषण

निम्नलिखित तिथियों और विषयों पर निम्नलिखित विद्वानों ने विस्तार भाषण दिये:-

—30/—

क्र•सं•	तिथि	विद्वान का नाम	विषय
1•	8•10•87	प्रो0 एच•एच•हॉक	बोलचाल-संस्कृत की
2•	14•10•87	श्री वत्सशंकराचार्य	शास्त्रार्थ विचार:
3•	18•10•87	श्री के•दक्षिणमूर्ति:	भारतम् पंचम: वेदा
4•	3•11•87	श्री पट्टाभिराम शास्त्री	काव्यात्म: विमर्श
5•	24•11•87	डा•गौरीनाथ शास्त्री	अभाव पदार्थ विच

अन्य कार्यकलाप

1• डा0 तातार्चार्य ने शीतकालीन नव्यन्याय कक्षा में भाग लिया ।

2• डा0 बी•सुब्रहमण्यम ने एन•सी•ई•आर•टी•द्वारा संचालित कार्य-गोष्ठी में भाग लिया ।

3• डा0 अरलीकट्टी ने जबलपुर में एन•सी•ई•आर•टी•द्वारा संचालि संस्कृत कोश तैयार करने के संबंध में कार्य-गोष्ठी में भाग लिया

4• डा0 कुटुम्ब शास्त्री ने कानपुर में संचालित कार्यगोष्ठी में दो व्याख्यान दिए ।

प्रकाशित पुस्तकें

1• श्री रामानुजचरित चम्पूकाव्यम्

2• सामान्य निरुक्त विवेचन

3• व्युत्पत्तिवाद:

नयी नियुक्तियाँ

प्रकृत वर्ष में विद्यापीठ में निम्नलिखित नयी नियुक्तियाँ हुईं ।

1• डा0 एस•सत्यनारायण मूर्ति-रीडर (व्याकरण)

---31/-

2• प्रवक्ता-श्री के•नलचक्रवर्ती (शिक्षाशास्त्री)
डा•एस•सुदर्शन शर्मा (साहित्य)

3• डा0 आर•लक्ष्मीनरसिंह शास्त्री (व्याकरण)

4• डा0 आर•के•भट्टाकुर (ज्योतिष)

5• डा0 रामसंजीवन त्रिपाठी (विशिष्ट अद्वैतवेदान्त)

6• डा0 टि•विजयराघवाचार्यालु (,,)

पी•टी•आई•

श्री एम•ए•नायडु

स्थानांतरण

1- श्री के•ई•गोविन्दन-इलाहबाद

2- डा•ई•एस•हेब्बर-गुरुवायूर

श्री लालबहादुर शास्त्री केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ, दिल्ली

इस विद्यापीठ की स्थापना 1962 में विजय-दशमी के दिन अखिल भारतीय संस्कृत सम्मेलन के द्वारा हुई थी । इसका मुख्य उद्देश्य था- राजधानी में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की एक संस्था बनाना ।

प्रस्तुत वर्ष के क्रियाकलापों का विवरण नीचे प्रस्तुत किया जाता है:-

कक्षा क्रम से छात्रों का प्रवेश

स्नातकोत्तर	कक्षा का नाम	प्रविष्ट छात्रों की सं0
1•	प्राकशास्त्री-प्रथम वर्ष	32
2•	,, द्वितीय वर्ष	26

---32/-

	3. शास्त्री-प्रथम वर्ष	72
	4. ,, द्वितीय वर्ष	61
	5. ,, तृतीय वर्ष	50
	6. आचार्य-प्रथम वर्ष	143
	7. ,, द्वितीय वर्ष	80
प्रशिक्षण	8. शिक्षाशास्त्री	297
	9. शिक्षाचार्य	9
		770

वार्षिक परीक्षा 87 का कक्षावार परिणाम:-

कक्षा का नाम	परीक्षा में सम्मिलित छात्र	उत्तीर्ण छा
प्राकशास्त्री-प्रथम वर्ष	29	28
,, द्वितीय वर्ष	26	20
शास्त्री-प्रथम वर्ष	72	61
,, द्वितीय वर्ष	61	54
,, तृतीय वर्ष	50	43
आचार्य-प्रथम वर्ष	131	109
,, द्वितीय वर्ष	80	77
शिक्षाशास्त्री	297	293
शिक्षाचार्य	9	7

छात्रवृत्ति पाने वालों की संख्या-कक्षावार

कक्षा	छात्र-संख्या
प्राकशास्त्री-प्रथम वर्ष	30
,, द्वितीय वर्ष	25
शास्त्री-प्रथम वर्ष	70
,, द्वितीय वर्ष	59
,, तृतीय वर्ष	50
आचार्य-प्रथम वर्ष	126
,, द्वितीय वर्ष	80
शिक्षाशास्त्री	60
शिक्षाचार्य	9
	509

छात्रावास में रहने वाले छात्रों की संख्या

आचार्य	26
शास्त्री	20
प्राकशास्त्री	8
शिक्षाशास्त्री	20
शिक्षाचार्य	4
विद्यावारिधि	12
	90

वर्ष 87-88 में निम्न व्यक्तियों ने विद्यापीठ में कार्यभार ग्रहण किया:-

श्रीमती एस•एल•रमामणि	व्याख्याता	अद्वैतवेदांत
श्री प्रेमकुमार शर्मा	,,	ज्योतिष
श्री सुदीप कुमार जैन	,,	जैनदर्शन
श्री के•ई•देवनाथन्	,,	न्याय
श्री रमेश चन्द्र दास शर्मा	,,	वेद
श्री हरिहर त्रिवेदी	,,	वेद

वर्ष 87-88 में जिस कर्मचारी का विद्यापीठ से स्थानान्तरण नहीं हुआ । भारत सरकार की अधिसूचना दिनांक 16-11-87 के द्वारा विद्यापीठ को डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी का स्तर प्रदान किया गया ।

संस्कृतदिवस 1987

विद्यापीठ मंत्रालय एवं संस्थान के संयुक्त तत्वावधान में 7 अगस्त 1987 को मावलंकर भवन में संस्कृत दिवस समारोह मनाया गया ।
मुख्य अतिथि न्यायमूर्ति श्री रंगनाथ मिश्र,उच्चतम न्यायालय
अध्यक्ष-डा0 लोकेश चन्द्र-भूतपूर्व संसद सदस्य

दीक्षान्त समारोह

8 अप्रैल 1988 को पिल्कों ऑडिटोरियम में विद्यापीठ का दीक्षान्त समारोह सम्पन्न हुआ । मानव संसाधन विकास मंत्री श्री पी•वी•नरसिंहराव महोदय ने दीक्षान्त-भाषण दिया तथा समारोह की अध्यक्षता शिक्षा एवं संस्कृति राज्य मन्त्री श्री ललितेश्वर प्रसाद शाही ने की ।

अभिनन्दन समारोह

16 मार्च 1988 को विद्यापीठ में आयोजित अभिनन्दन समारोह में

कृषि राज्य मन्त्री श्री हरिकृष्ण शास्त्री जी का अभिनन्दन किया गया ।

पुस्तक विमोचन

18 मार्च 1988 को विद्यापीठ में आयोजित पंचांग लोकार्पण समारोह में श्री उमाशंकर दीक्षित द्वारा विद्यापीठ पंचांग का जो प्रत्येक वर्ष विद्यापीठ द्वारा प्रकाशित किया जाता है, विमोचन किया गया । समारोह की अध्यक्षता श्री ललितेश्वर प्रसाद शाही ने की ।

शारदीय ज्ञान महोत्सव(प्रसार भाषण)

विद्यापीठ द्वारा प्रत्येक वर्ष शारदीय ज्ञान महोत्सव के अंतर्गत भारतीय संस्कृति एवं संस्कृत साहित्य पर व्याख्यानों का आयोजन किया जाता है । इस वर्ष निम्नलिखित व्याख्यान दिये गए-

1- 17•2•87 एवं
18•2•87 पं0 रतीश झा(समवायसिद्धि:
2- अनुभागप्रमाणविचार:

अखिल भारतीय प्रतियोगिता

1987-88

क्र•सं•	नाम	विषय	श्रेणी
1-	श्री ललन झा	साहित्य	प्रथम: सान्तवना-पुरस्कारेण-पुरस्कृत:
2-	श्री कृष्णानन्द झा	वेदान्त	

अन्तर्विद्यापीठीय युवक समारोह-1987-88

1.	श्री नागेन्द्र झा	पुराणेतिहासयो:	प्रथम:
2.	श्री ब्रह्मचारी शिवशंकर	वेदान्ते	प्रथम:
3.	,, ,,	न्यायवैशेषिकयो:	प्रथम:
4.	श्री लालन झा	साहित्य	द्वितीय:
5.	श्री अंगद सिंह	सांख्ययोगयो:	द्वितीय:
6.	श्री रतन कुमार झा	धर्मशास्त्रे	द्वितीय:
7.	श्री रतन कुमार झा	शिक्षाशास्त्रे	द्वितीय:
8.	श्री ब्रह्मचारी शिवशंकर	गीते	द्वितीय:

अन्तर्महाविद्यालयीय प्रतियोगिता

1.	श्री सनातन धर्म सभा पटेल नगर	श्री नवल किशोर चौधरी	भाषणे	प्रथम:
2.	सेन्ट स्टीफन्स महाविद्यालय	श्री नवलकिशोर चौधरी	श्लोकावृता	द्वितीय:
3.	कालिन्दी महाविद्यालय	श्री ब्रह्मचारी शिव-शंकर:	वाद-विवादे	द्वितीय:
4.	,, ,,	कु॰शोभा रानी	,,	प्रथम:
5.	श्री ब्राह्मण संस्कृत महाविद्यालय रोमारार्य जीन्द	श्री रतन कुमार झा	भाषणे	प्रथम:
6.	,,	श्री विष्णु कुमार	भाषणे	चलवैजयन्ती प्रथम:
7.	,,	श्री अवधकिशोर चौधरी	श्लोकोच्चारण	प्रथम:
8.	किरोड़ीमल महाविद्यालय	श्री नवलकिशोर चौधरी	श्लोकावृतौ	प्रथम:

9.	देववाणी परिषद्	श्री नवलकिशोर चौधरी	श्लोकावृतौ	प्रथम:
10.	श्री दीवानकृष्ण किशोर सनातन धर्म आदर्श सं॰म॰वि॰ अम्बाला	श्री ब्रह्मचारी शिव-शंकर	श्लोकान्त्याक्षर्याम-	प्रथम:
11.	,,	,,	,,	
12.		श्री रूद्रानन्द झा	चलवैजयन्ती	
13.	श्री दीवान कृष्ण-किशोर सनातनधर्म आदर्श सं॰म॰विद्यालय अम्बाला	श्री अवधकिशोर चौधरी	श्लोकाच्चारणे चलवैजयन्ती	
14.	,,	श्रीधर मिश्र भाषणे श्री ब्रह्मचारी शिवशंकर		चलवैजयन्ती
15.	मध्यप्रदेश संस्कृत अकादमी	श्री श्रीधर मिश्र	व्याकरणाशास्त्रार्थे	प्रथम
16.	दिल्ली संस्कृत अकादमी	1॰श्री ब्रह्मचारी शिवशंकर 2॰श्री बलदेव: 3॰श्री नवलकिशोर चौधरी 4॰श्री अवधकिशोर चौधरी 5॰श्री मोहनकुमार झा 6॰श्री रूद्रानन्द झा 7॰श्री दुग मोहन झा 8॰श्री विनोद मिश्र	श्लोकान्त्याक्षर्याम्	प्रथम:

श्री सदाशिव केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ, पुरी (उड़ीसा)

सदाशिव संस्कृत कालेज, पुरी पहले उड़ीसा राज्य सरकार के अधीन पारंपरिक ढंग से संस्कृताध्ययन करा रहा था । 15 अगस्त, 1971 को यह राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान के द्वारा अधिगृहीत हुआ जो मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार के अधीन स्वायत्त संस्था है । यह जनता में संस्कृत के प्रचार-प्रसार के लिये स्थापित हुआ था । पुराने सदाशिव संस्कृत कालेज का नया नामकरण हुआ-श्री सदाशिव केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ । यह अपने उद्देश्य की प्राप्ति के लिये सतत् प्रयत्नशील है ।

सत्र 1986-87 में विविध कक्षाओं में प्रवेश:-

कक्षा	छात्रसंख्या	
प्रथमा-प्रथम वर्ष	3	
,, द्वितीय वर्ष	5	
,, तृतीय वर्ष	3	
		11
पूर्वमध्यमा-प्रथम वर्ष	6	
,, द्वितीय वर्ष	6	
		12
उत्तरमध्यमा-प्रथम वर्ष	27	
,, द्वितीय वर्ष	6	
		33
प्राकशास्त्री-प्रथम वर्ष	27	
,, द्वितीय वर्ष	12	
		41

शास्त्री-प्रथम वर्ष	54	
,, द्वितीय वर्ष	49	
,, तृतीय वर्ष	35	
		138
आचार्य-प्रथम वर्ष	64	
,, द्वितीय वर्ष	33	
		97
शिक्षाशास्त्री	59	
कुल		391

प्रकृत वर्ष में 335 छात्रों को छात्रवृत्ति प्रदान की गयी और 152 छात्रों को छात्रावास की सुविधा दी गई ।

श्री रणवीर केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ, जम्मू

इतिहास

जम्मू-काश्मीर नरेश महाराजाधिराज श्री रणवीर सिंह द्वारा संस्थापित श्री रघुनाथ संस्कृत महाविद्यालय का अधिग्रहण भारत सरकार द्वारा 1 अप्रैल 1971 ई० को किया गया था । जिसका नाम-श्री रणवीर केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ रखा गया ।

इसमें प्रथमा से लेकर आचार्य तक छात्र-छात्रायें अध्ययन करते हैं । इसमें साहित्य, व्याकरण, ज्योतिष तथा सर्वदर्शन में स्नातक तथा स्नातकोत्तर कक्षायें चलती हैं । सन् 1979 ई० से शिक्षाशास्त्री (बी०एड०) की कक्षायें भी चल रही हैं जिसमें संस्कृत के शिक्षकों को प्रशिक्षित किया

जाता है । शास्त्री स्तर तक पारम्परिक संस्कृत शास्त्रीय विषयों के साथ आधुनिक विषयों-हिन्दी, डोगरी, अंग्रेजी, राजनीति/इतिहास आदि के अध्यापन की व्यवस्था है ।

विद्यापीठ में काश्मीर शैवदर्शन कोश प्रोजेक्ट है जो कि काश्मीर शैव दर्शन के कोश का निर्माण कर रहा है । इसका कार्य प्रगति पर है तथा लगभग 1/---- वर्ष तक पूरा हो जाएगा ।
2

विद्यापीठ । अप्रैल, 1971 से ही 8 किराये के भवनों में चल रहा है जम्मू काश्मीर सरकार ने भलवात में विद्यापीठ के भवन के लिए जगह दी है । प्रकृत वर्ष में प्रवेश का विवरण इस प्रकार है:-

प्रथमा-प्रथम वर्ष	8	
,, द्वितीय वर्ष	7	
,, तृतीय वर्ष	9	
	---	24
पूर्वमध्यमा-प्रथम वर्ष	21	
,, द्वितीय वर्ष	4	
	---	25
उत्तरमध्यमा-प्रथम वर्ष	19	
,, द्वितीय	13	
	---	32
प्राकशास्त्री-प्रथम वर्ष	7	
,, द्वितीय वर्ष	6	
	---	13
शास्त्री-प्रथम वर्ष	16	
,, द्वितीय वर्ष	9	
,, तृतीय वर्ष	39	
	---	64

आचार्य-प्रथम वर्ष(सा0)	15	
,, ,, (फ॰ज्यो॰)	15	
,, ,, (सर्वदर्शन	12	
,, ,, (नव्य व्या॰)	1	
	---	43
आचार्य-द्वितीय वर्ष(सा॰)	10	
,, ,, (फ॰ज्यो॰)	5	
,, ,, (सर्वदर्शन)	12	
,, ,, (नव्य व्या॰)	1	
शिक्षाशास्त्री (बी॰एड॰)	60	
विद्यावारिधि	6	

छात्रावास

जम्मू काश्मीर के अतिरिक्त प्रदेश जैसे हिमाचलप्रदेश, पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, बिहार, मध्यप्रदेश, भोपाल आदि से छात्र आ कर यहाँ प्रवेश लेते हैं । विद्यापीठ के पास अपना भवन नहीं है इसलिये अध्यापन-कार्य तथा पुस्तकालय आदि किराये के मकान में होते हैं । उसी तरह छात्रावास भी किराये के मकान में चल रहे हैं । छात्रों को आवास मुफ्त मिलता है । तीन छात्रावासों में 67 छात्र रहते हैं ।

छात्रवृत्ति

प्रथमा से आचार्य तक के छात्रों को छात्रवृत्ति दी जाती है । छात्रवृत्ति का विवरण नीचे प्रस्तुत है:-

प्रथमा-	21
पूर्वमध्यमा-	14

उत्तरमध्यमा-	22
प्राकशास्त्री-	11
शास्त्री-	59
आचार्य-	62
शिक्षाशास्त्री-	30
विद्यावारिधि-	13
कुल	232

परीक्षा

1987-88 वार्षिक परीक्षा में उत्तीर्ण होने वाले छात्रों का विवरण निम्न प्रकार से है:-

प्रथमा-	
पूर्वमध्यमा-	4
उत्तरमध्यमा-	11
प्राकशास्त्री-	9
शास्त्री-	23
आचार्य-	10
शिक्षाशास्त्री-	36

बैठकें

शैक्षिक कार्यों की वृद्धि के लिये विद्यापीठ में छात्रों और अध्यापकों की 8 बैठकें हुईं। इन बैठकों में विद्यापीठ की दैनदिन समस्यायें, शैक्षिक क्रिया-कलाप की वृद्धि, पाठ्यक्रम आदि के संबंध में विचार-विमर्श हुआ । प्रतिदिन

4 और 5 के भीतर शोध-छात्रों और अध्यापकों की एक बैठक होती है जिसमें शोध-विषयों पर बातचीत होती है । हरेक महीने के अंत में सरस्वती परिषद् की एक बैठक होती है जिसमें छात्र अपने विचार हिंदी संस्कृत और अंग्रेजी में व्यक्त करते हैं ।

विस्तार भाषण

प्रकृत वर्ष में निम्नलिखित विस्तार-भाषण हुए:-

1- डा0 रामशकल पाण्डेय-निर्विघालयीयकरण
2- श्री रतिनाथ झा- कारइत्री प्रतिभा
3- डा0 ब्रजमोहन चतुर्वेदी-अभिनव गुप्त के अनुसार रसानुभूति
4- डा0 गयाचरण त्रिपाठी-विष्णु अवतार-हयग्रीव

अन्य कार्यकलाप

खेल

विद्यापीठ में पढ़ाई के अतिरिक्त खेल-कूद के भी कार्य होते हैं ।

सरस्वती परिषद्

विद्यापीठ में छात्रों और विद्यार्थियों का सरस्वती परिषद् बहुत दिनों से चल रहा है ।.....

राष्ट्रिय खेलों में भाग लेना

इस विद्यापीठ के कुछ छात्र राष्ट्रिय खेलों में भाग लेते रहे हैं । एक छात्र ने जूडो और कराटे में भाग लिया और पुरस्कार पाया ।

संस्कृत वाद-विवाद प्रतियोगिता, श्लोकपाठ प्रतियोगिता और अन्त्याक्षरी

छात्रों की वाद-विवाद, श्लोकपाठ और अन्त्याक्षरी की प्रतियोगिताएं हुई जिनमें एक ने प्रथम और दूसरा द्वितीय पुरस्कार पाया ।

स्काउट गाइड और प्रथम उपचार चिकित्सा

शिक्षाशास्त्री के छात्रों को स्काउट गाइड और प्रथम उपचार की शिक्षा दी गई ।

राष्ट्रिय दिवस समारोह

स्वतन्त्रता-दिवस-रिपब्लिक डे आदि पर विद्यापीठ की ओर से उत्सव मनाया जाता है । इस अवसर पर शिक्षक और प्राचार्य द्वारा भाषण होते हैं । अगस्त 1987 में संस्कृत-दिवस का आयोजन हुआ ।

सरस्वती पूजा

बसंत पंचमी के दिन विद्यापीठ में सरस्वती-पूजा हुई । इस विद्यापीठ से एक वैष्णवी पत्रिका प्रकाशित होती है जिसमें संस्कृत, हिन्दी, डोगरी और अंग्रेजी में लेख दिये जाते हैं ।

श्री हर्ष द्वारा रचित नागानंद नाटक का अभिनय इस विद्यापीठ में हुआ ।

इस विद्यापीठ के छात्रों ने अन्तर विद्यापीठीय विश्वविद्यालय प्रतियोगिता में भाग लिया ।

8 मार्च 1988 को विद्यापीठ में दीक्षान्त-भाषण समारोह हुआ जिसमें 250 छात्रों को उपाधियाँ दी गईं ।

इस वर्ष निम्नलिखित दो ग्रन्थों का प्रकाशन हुआ:-

1- शैवाचार्य नागार्जुन

2- तस्य स्तोत्रयुगलम्

नयी नियुक्तियाँ

इस विद्यापीठ में निम्नलिखित नयी नियुक्तियाँ हुईं:-

1- डा० राम लखन पाण्डेय-साहित्य व्याख्याता

2- डा० शिवकान्त झा-व्याकरण व्याख्याता

3- डा० वि·एन·गिरि-साहित्य व्याख्याता

4- वासुदेव शर्मा-ज्योतिष व्याख्याता

5- श्री के·सी·योगी-व्याकरण व्याख्याता

6- श्री पी·के·दीक्षित-दर्शन व्याख्याता

7- श्री टी·के·शर्मा-शिक्षाशास्त्र व्याख्याता

8- श्रीमती प्रभा चौधरी-शिक्षाशास्त्र व्याख्याता

9- श्री ओमप्रकाश-पी·टी·आई·

डा·गंगानाथ झा केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ, इलाहबाद (उ०प्र०)

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान के अन्दर एक शोध-संस्था है । इस विद्यापीठ में प्रतिवर्ष कुछ शोध छात्र पंजीयित होते हैं और विद्यावारिधि उपाधि प्राप्ति के लिये शोध-कार्य करते हैं । ये छात्र इस विद्यापीठ के विद्वानों के अधीन शोध-कार्य करते हैं और विद्यापीठ के पुस्तकालय तथा पाण्डुलिपि विभाग का उपयोग करते हैं । हमारे पुस्तकालय और पाण्डुलिपि विभाग का उपयोग केवल छात्र और अध्यापक ही नहीं करते बल्कि नगर के और

संभ्रान्त पुरुष भी जिन्हें संस्कृत में रुचि है आ कर इसका उपयोग करते हैं ।

विद्यापीठ में अभी 5 रीडर, 4 प्रवक्ता और 5 शोध सहायक कार्यरत हैं । यह शोध-कार्य तो करते ही हैं-उनको कुछ और कार्य भी सुपुर्द किये जा हैं । विद्यापीठ की शोध-योजनायें केवल एक विद्वान नहीं बल्कि मिलजुल कर सब करते हैं । इस विद्यापीठ के मुख्य कार्यकलाप हैं-दुर्लभ ग्रन्थों का प्रकाशन इसके लिए हमारे पुस्तकालय में प्राप्त पाण्डुलिपियों का भरसक उपयोग होत है । पाण्डुलिपियाँ अन्य स्थानों से भी प्राप्त की जाती हैं । संस्कृत भाषा और साहित्य धर्म तथा दर्शन के क्षेत्र में भी यहाँ पर अध्ययन होता है । 1979 से यहाँ एक भाषा-विज्ञान एकक भी कार्य कर रहा है जो संस्कृत-शिक्षण को सुलभ एवं सुगम बनाने की ओर क्रियाशील है ।

इस विद्यापीठ के अधीन एक स्वतंत्र प्रकाशन और विक्रय विभाग है । योजना के अन्दर जो पुस्तकें प्रकाशित होती हैं उनका विक्रय भी यहीं हो है । विद्यापीठ से नियमित रूप से एक त्रैमासिक शोध-पत्रिका भी प्रकाशित होती है । इसका आरंभ 1943 में हुआ था जो अब तक लगातार चल रहा है । इस शोध-पत्रिका का विश्व में सम्मान हो रहा है ।

इस विद्यापीठ में शिक्षण का कार्य नहीं होता है । फिर भी कई वर्षों से यहाँ छात्र तथा शिक्षक आ कर अनेक विषयों पर गहन अध्ययन करते हैं । शास्त्र चूड़ामणि योजना के अंतर्गत भी अभी डा० चन्द्रभानु त्रिपाठी कार्यरत हैं ।

पुस्तकालय

इस विद्यापीठ का मुख्य अध्ययन है-पुस्तकालय, जिसमें भारतीय परम्परा की पुस्तकें और शोध-पत्र प्राप्त हैं । यहाँ 54 हजार पुस्तकें हैं जिनमें से 6

शोध-पत्रिकायें हैं । 87-88 सत्र में 708 पुस्तकें और 127 शोध-पत्रिकायें सम्मिलित की गईं । यहाँ केवल संस्कृत की दुर्लभ और प्राचीन पुस्तकें ही नहीं हैं बल्कि इससे संबंधित अन्य विषय जैसे भारतीय धर्म दर्शन इतिहास, कला शिल्प शास्त्र, प्राकृतिक विज्ञान, भाषा और साहित्य संबंधी पुस्तकें भी प्राप्त हैं । केवल हिंदी और अंग्रेजी में ही नहीं बल्कि यूरोप में और भारत की अन्य भाषाओं में लिखी गई पुस्तकें यहाँ मंगवाई जाती हैं । पुस्तक-प्राप्ति की योजना यहाँ इतनी दृढ़ है कि कोई भी दुर्लभ प्रकाशित पुस्तक बच नहीं पाती । कुछ संस्कृत पत्रिकायें विनिमय द्वारा प्राप्त की जाती हैं ।

पाण्डुलिपि कक्ष

विद्यापीठ के पाण्डुलिपि विभाग में 44 हजार 200 पुस्तकें हैं । 1987-89 में 1218 पाण्डुलिपियाँ प्राप्त की गई थीं । इन पुस्तकों के द्वारा संस्कृत का कोई भी क्षेत्र अछूता नहीं रहा है । प्रारंभ में इस पुस्तकालय में केवल वही पुस्तकें थीं जो श्री गंगानाथ झा के पास थीं । 1971 में अधिग्रहण के समय 13 हजार पाण्डुलिपियाँ थीं । यह संख्या आज 44हजार 200 तक पहुँच गयी है । इन तीस हजार पाण्डुलिपियों में अधिकांश पिछले ही कई वर्षों में खरीदी गई हैं । यद्यपि सभी विभाग की पुस्तकें यहाँ पर हैं फिर भी तंत्र न्याय धर्मशास्त्र और साहित्य ग्रन्थों की प्रचुरता है । इन पाण्डुलिपियों का सम्पादन विद्यापीठ के शोध-अधिकारी तथा विद्यार्थियों के द्वारा किया जाता है । कुछ का प्रकाशन भी हो चुका है।

शोध योजनायें

इस विद्यापीठ का मुख्य कार्यकलाप अप्रकाशित संस्कृत ग्रन्थों का प्रकाशन

करना है । तथापित बड़ी-बड़ी योजनायें भी इसमें आ जाती हैं । अभी तक तो सबसे बड़ी योजना थी वह थी पंजाबी संस्कृत शब्दकोश का निर्माण । इसमें पंजाबी में उपर्युक्त वही शब्द लिये गये हैं जिनका उद्भव संस्कृत से हुआ है । पंजाबी भाषी व्यक्तियों के लिए इस शब्दकोश से बड़ा लाभ होगा । इस शब्दकोश का विमोचन माननीय डा0 शंकरदयाल शर्मा-उप-राष्ट्रपति ने 2 फरवरी 1988 को किया था । उन्होंने इसकी बड़ी प्रशंसा की थी और आशा व्यक्त की थी कि ऐसे बहुत से अन्य कार्य भी किये जायेंगे । इसी वर्ष अन्य दो पुस्तकों का भी प्रकाशन हुआ-1-लघुवार्तिकम् कहा जाता है कि इसकी रचना कुमार कुमारिलभट्ट ने की थी । इसका सम्पादन डा0 कमलनयन शर्मा ने किया है और पहली बार इसका प्रकाशन हुआ है । 2- अजिता-भाग-1-कुमारिलभट्ट के तंत्र वार्तिक पर यह टीका है इसका सम्पादन किशोरनाथ झा ने किया और यह भी पहली बार प्रकाशित हुआ है । जब से विद्यापीठ का आरंभ हुआ तब से अब तक 54 ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके हैं ।

कार्याधीन योजनायें

1- वेदभाष्य कोश-जिसमें भारतीय टीकाकारों के द्वारा ऋग्वेदीय शब्दों का अर्थ बताया गया है ।

2- व्यवहारिक वाक्यकोश-जिसमें नाटकों में प्रयुक्त बातचीत, वाक्यों का संग्रह किया गया है ।

3- पंजाबी भाषी लोगों के लिए संस्कृत शिक्षण की पुस्तक ।

विद्यापीठ के प्रवक्ता और रीडर निम्नलिखित पुस्तकों के सम्पादन में लगे हुए हैं । 1-अजिता 2-स्मृतिसार 3- सुमनोरमा 4- विद्यापरिण्य नाटकम् 5- न्यायतत्वालोक 6- परिभाषार्थ मंजरी 7- अद्वैत सुधा

—50/-

8- स्वरांकुश 9- मुद्राकक्षे 10- चित्रबंध रामायण
11- अयसोस पंचरात्र 12- गंगावतरण चम्पू ।

शोध छात्र और उनके द्वारा प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध

सत्र 1987-88 में सब मिलाकर यह 45 छात्रों का विद्यापीठ में पंजीयन हुआ और संस्थान द्वारा निर्णित विषयों पर यह शोध-कार्य कर रहे हैं । प्रस्तुत वर्ष में 17 शोध-प्रबन्ध परीक्षा के लिये जमा किये गये हैं । 1979 से अब तक 68 शोध-प्रबन्ध जमा हो चुके हैं ।

उत्सव तथा अन्य कार्यकलाप

19 नवम्बर 1987 को विद्यापीठ ने अपनी वर्षगांठ मनाई । संस्कृत सम्बन्धी कई बातें लोगों के सामने रखीं गईं । इस अवसर पर भास का उरूभंगम्-मंचन हुआ ।

इस विद्यापीठ के नाटक वाली टीम को संगीत मेघदूतम् के मंचन के लिए अगस्त 1987 में बुलाया गया था और अन्तरविद्यापीठ युवक समारोह में इलाहबाद विद्यापीठ को प्रथम पुरस्कार मिला था । मावलंकर हाल में वेद विद्या प्रतिष्ठान की ओर से इसका मंचन हुआ था । इसको लोगों ने बहुत पसन्द किया और इस कारण अनेक जगहों से भी इसे मंचन के लिये निमन्त्रण मिला ।

विस्तार भाषण

विद्यापीठ समय-समय पर विस्तार-भाषण कराता है । प्रस्तुत वर्ष में निम्नलिखित विद्वानों ने भाषण दिये:- 1- प्रो0 विश्वनारायण शास्त्री- कालिदास में भारतीय इतिहास और संस्कृति
2- प्रो0 रमाकान्त अंगीरस- शाक्त दर्शन में सौन्दर्य विचार
3- शैव और शाक्त दर्शनों में भाषा विचार ।

—51/-

गुरूवायूर केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ(केरल)

प्रवेश

गुरूवायूर केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ का पुराना नाम साहित्य दीपि संस्कृत विद्यापीठ था । अधिग्रहण के बाद यह नाम बदल दिया गया । यह आठ विद्यापीठों में से एक है । विद्यापीठ ग्रीष्माकाश के पश्चात् 13 जुला 1987 को खुला । इसके साथ ही प्रवेश आदि कार्यक्रम शुरू हो गया । इस विद्यापीठ में प्रवेश का विवरण निम्न प्रकार है:-

कक्षाएँ	छात्र संख्या
प्राकशास्त्री-प्रथम वर्ष	20
,, द्वितीय वर्ष	14
शास्त्री-प्रथम वर्ष	17
,, द्वितीय वर्ष	22
,, तृतीय वर्ष	10
आचार्य-प्रथम वर्ष	21
,, द्वितीय वर्ष	18
शिक्षाशास्त्री	59
कुल	181

छात्रवृत्ति

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान की ओर से छात्रवृत्ति के रूप में । लाख 30 हजार दिया गया । छात्रवृत्ति का विवरण निम्न प्रकार से है:-

प्राकशास्त्री-प्रथम वर्ष	8
,, द्वितीय वर्ष	14
शास्त्री-प्रथम वर्ष	16
,, द्वितीय वर्ष	18
,, तृतीय वर्ष	11
आचार्य-प्रथम वर्ष	18
,, द्वितीय वर्ष	17
शिक्षाशास्त्री	30
कुल	132

परीक्षा-परिणाम

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान की 1987 वाली वार्षिक परीक्षा में उत्तीर्ण छात्रों का विवरण इस प्रकार है:-

प्राकशास्त्री-द्वितीय वर्ष	81·25 प्रतिशत
शास्त्री-प्रथम वर्ष	86 प्रतिशत
,, द्वितीय वर्ष	शतप्रतिशत
,, तृतीय वर्ष	73 प्रतिशत
आचार्य-प्रथम वर्ष	90 प्रतिशत
,, द्वितीय वर्ष	80 प्रतिशत
शिक्षाशास्त्री	95 प्रतिशत

विस्तार भाषण

प्रो० आर०तंगास्वामी जो शास्त्र चूड़ामणि विद्वान के रूप में कुप्पू स्वामी शास्त्री शोध संस्थान में कार्य कर रहे हैं, अद्वैत दर्शन पर भाषण

दिया ।

अन्य कार्यकलाप

22 मार्च 1988 को ललित कला दिवस मनाया गया । खेल-कूद दिवस 10 और 11 मार्च 88 को प्राचार्य द्वारा उद्घाटित हुआ । साहित्य-दिवस का उद्घाटन प्राचार्य द्वारा 23 मार्च 1988 को हुआ । संक्षेप में ये सारे कार्यकलाप एक सप्ताह तक चलते रहे । हम लोगों की इच्छा थी कि छात्रों को अधिक से अधिक बातों के लिए मौका दिया जाए ।

विशेष दीक्षान्त समारोह

विद्यापीठ का वार्षिक दीक्षान्त समारोह साहित्य अकादमी त्रिचूर में 26 दिसम्बर को हुआ । डा0 मोहन तम्पी-कुलपति केरल विश्वविद्यालय ने इसकी अध्यक्षता की । कु0 किरण सोनी त्रिचूर ने राज्यपाल की जगह पर दीक्षान्त-भाषण दिया । डा0 मण्डन मिश्र-निदेशक, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान ने उपाधियां बांटीं । उपाधि-वितरण का विवरण इस प्रकार है:-

प्राकशास्त्री	38
शास्त्री	20
शिक्षाचार्य	44
शिक्षाशास्त्री	92
विद्यावारिधि	5

इसमें वे भी कुछ छात्र थे जिन्होंने 1986 की वार्षिक परीक्षा में परी पास की ।

अन्तर विद्यापीठीय युवक समारोह

अन्तर विद्यापीठीय युवक समारोह 26 दिसम्बर 1987 को शुरू हुआ और इसका समापन 29 दिसम्बर को हुआ । इसमें नगर के लोगों को भी आमंत्रित किया गया था । इस आमंत्रण के सिलसिले में कु0 किरण सोनी कलैक्टर त्रिचूर ने अध्यक्षता की । न्याय मूर्ति के•सुकुमारन् ने उत्सव का उद्घाटन 26 दिसम्बर को किया । इस समारोह में बहुत से शैक्षणिक और सांस्कृतिक कार्यक्रम हुए । इस विद्यापीठ के छात्रों ने संस्कृत कार्यक्रमों में अपना अच्छा हाथ बंटाया । शैक्षिक प्रतियोगिताओं में भी छात्रों ने अच्छी प्रशंसा प्राप्त की ।

सम्पूर्ण कार्यक्रम 29 दिसम्बर को हुआ । स्वामी मृदण्डानंद जी जो स्थानीय रामकृष्ण आश्रम के अध्यक्ष हैं, मुख्य अतिथि के रूप में विराजमान थे । संक्षेप में युवक-समारोह अच्छी तरह सम्पन्न हुआ ।

प्रकाशित पुस्तकें

शून्य

स्थानांतरण

फरवरी 1989 में अनुभाग अधिकारी (प्रशासन) का स्थानांतरण जयपुर विद्यापीठ में किया गया ।

नयी नियुक्तियां

दो रीडर, तीन लैक्चरार और एक पी•आॅन की बहाली इस विद्यापीठ में इसी सत्र में हुई ।

केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ, जयपुर

इस विद्यापीठ की स्थापना, मई 1983 में हुई थी। तत्कालीन राजस्थान मुख्यमंत्री श्री शिवचरण माथुर के तत्कालीन शिक्षा मंत्री भारत सरकार के विनय पर राजस्थान संस्कृत अकादमी की अनुशंसा से ऐसा हुआ था।

शिक्षण सत्र 1987-88 की वार्षिक गतिविधियों का संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार से है:-

1. विविध कक्षाओं में प्रवेश

क्र.सं.	कक्षा	प्रवेश
क-	आचार्य प्रथम वर्ष	44
ख-	आचार्य द्वितीय वर्ष	22
ग-	शिक्षाशास्त्री	74
घ-	शास्त्री प्रथम वर्ष	14
ङ-	शास्त्री द्वितीय वर्ष	4
च-	प्राकशास्त्री प्रथम वर्ष	5
छ-	प्राकशास्त्री द्वितीय वर्ष	28
		191

ज- उपर्युक्त छात्रों के अलावा सत्र 1987-88 के दौरान विद्यावारिधि में 7 शोध छात्रों का प्रवेश हुआ जिसमें से 5 स्वयंपाठी तथा दो नियमित छात्र हैं। नियमित छात्रों को नियमानुसार छात्रवृत्ति दी जा रही है।

2. विविध कक्षाओं का परीक्षा परिणाम

	कक्षा	संख्या
क-	आचार्य प्रथम वर्ष	30

ख-	आचार्य द्वितीय वर्ष	19
ग-	शिक्षाशास्त्री	69
घ-	शास्त्री प्रथम वर्ष	13
ङ-	शास्त्री द्वितीय वर्ष	4
च-	प्राकशास्त्री प्रथम वर्ष	4
छ-	प्राकशास्त्री द्वितीय वर्ष	19
		158

3. विविध कक्षाओं में दी गई छात्रवृत्ति का विवरण

क-	आचार्य प्रथम वर्ष	39
ख-	आचार्य द्वितीय वर्ष	19
ग-	शिक्षाशास्त्री	30
घ-	शास्त्री प्रथम वर्ष	11
ङ-	शास्त्री द्वितीय वर्ष	4
च-	प्राकशास्त्री प्रथम वर्ष	3
छ-	प्राकशास्त्री द्वितीय वर्ष	25
		131

4. विविध कक्षाओं में छात्रों को दी गई छात्रावास सुविधा-विवरण

क-	आचार्य प्रथम वर्ष	18
ख-	आचार्य द्वितीय वर्ष	5
ग-	शिक्षाशास्त्री	3
घ-	शास्त्री प्रथम वर्ष	3
ङ-	शास्त्री द्वितीय वर्ष	4
च-	प्राकशास्त्री प्रथम वर्ष	4
छ-	प्राकशास्त्री द्वितीय वर्ष	15
		52

5. बैठकें

विद्यापीठ शोधकर्ता चयन समिति की प्रथम बैठक दिनांक 19.10.87 को सम्पन्न हुई जिसमें साक्षात्कार हेतु बुलाये गये 10 छात्र-छात्राओं में से निम्नांकित 9 छात्रों का चयन किया गया:-

1. विमल कुमार जैन
2- तारा शंकर शर्मा
3- श्रीमती रमा जैन
4- शिवचरण नाथ त्रिपाठी
5- रामकुमार दाधीच
6- रमाकान्त शर्मा
7- कौशल दत्त शर्मा
8- सूर्यप्रकाश त्रिवेदी
9- दिनेश कुमार द्विवेदी

नोट:- एक छात्र श्री बनवारी लाल पारीक का आवेदन-पत्र अस्वीकृत किया गया।

6. शास्त्रीय व्याख्यान

सत्र 1987-88 के दौरान निम्नलिखित विद्वानों के व्याख्यान सम्पन्न हुए:-

क्र.सं.	नाम	विषय	दिनांक
1-	पं.प्रवर भगवत प्रसाद त्रिपाठी भू.पूर्व प्राध्यापक, श्री जगन्नाथ संस्कृत विश्वविद्यालय, पुरी	रसनिष्पत्ति	2.11.87
		पाश्चात्य सौन्दर्य शास्त्रस्थ प्राचयलंकार- शास्त्रे अन्तर्भाव:"	3.11.87
2-			

संस्कृत वाक् प्रतियोगिता में विद्यापीठ के निम्नलिखित छात्र-छात्राएँ विजयी हुए:-

1- श्री महावीर प्रसाद सारस्वत-व्याकरण में प्रथम पुरस्कार
2- श्री अम्बुजकुमार छांचोलिया-व्याकरण में सांत्वना पुरस्कार
3- कु.क्रान्ति आर्या- साहित्य में सांत्वना पुरस्कार
4- शकुन्तला आर्या- सांख्ययोग में सांत्वना पुरस्कार ।

(छ) विद्यापीठ का तृतीय दीक्षान्त समारोह दिनांक 26.2.88 को माननीय श्री ललितेश्वर प्रसाद साही, शिक्षा एवं संस्कृति राज्यमंत्री, भारत सरकार की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ।

(ज) संस्थान द्वारा केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ, गुरुवायूर में आयोजित पांचवे अन्तर्विद्यापीठीय युवक समारोह में इस विद्यापीठ के निम्नलिखित छात्र विजयी हुए:-

(1) श्री जयप्रकाश मिश्र - प्रहसन में प्रथम
(2) कु0 क्रान्ति आर्या - शिक्षाशास्त्र में प्रथम
(3) श्री राजकुमार जैन - जैनदर्शन में द्वितीय

(झ) राजस्थान संस्कृत अकादमी द्वारा दिनांक 27.3.88 को आयोजित संस्कृत वाद-विवाद एवं श्लोक पाठ प्रतियोगिता में विद्यापीठ के निम्नांकित छात्र विजयी हुए:-

क्र.सं.	छात्र का नाम	विषय	स्थान	पुरस्कार राशि
1.	कु0 क्रान्ति आर्या	वाद-विवाद	प्रथम	251/-
2.	कु0 ऊषा शर्मा	श्लोक पाठ	प्रथम	251/-

8. प्रकाशित ग्रन्थों का विवरण

राजस्थान में विद्यमान हस्तलिखित ग्रन्थ और दुर्लभ पाण्डुलिपियों के संग्रहण, सम्पादन एवं प्रकाशन की दृष्टि से सत्र 1987-88 के दौरान निम्नांकित ग्रन्थों का प्रकाशन सम्पन्न हुआ:-

क- पं. प्रवर भट्ट मथुरानाथ शास्त्री की प्रबन्ध पारिजात
ख- पं. प्रवर भट्ट मथुरानाथ शास्त्री की गीर्वाणगिरा गौरवम्"

उपर्युक्त ग्रन्थों में से "प्रबन्ध पारिजात" पुस्तक का लोकार्पण समारोह दिनांक 20.1.88 को सम्पन्न हुआ ।

9. नवीन भर्ती

विद्यापीठ में सत्र 1987-88 के दौरान निम्नांकित कर्मचारियों की नियुक्ति हुई:-

क्र.सं.	नाम	पद	कार्यग्रहण तिथि
1.	डा0 रूपनारायण त्रिपाठी	व्याख्याता	15.7.87
2.	श्री रमेश सिंह	पी.टी.आई.	15.7.87
3.	डा0 भानुमूर्ति जम्भलगड्डक	व्याख्याता	20.7.87
4.	श्रीमती सन्तोष मित्तल	व्याख्याता	27.7.87
5.	श्री वाई.एस.रमेश	व्याख्याता	31.7.87
6.	श्री श्रीयांश कुमार सिंघई	व्याख्याता	3.8.87
7.	श्री हरेकृष्ण महापात्र	व्याख्याता	13.8.87
8.	श्री के.पी.केसवन	व्याख्याता	10.9.87
9.	श्री सीताराम शर्मा	च.श्रे.क. (तदर्थ)	24.9.87
10.	श्री भुवनेश कुमार मौर्य	च.श्रे.के. (तदर्थ)	24.9.87
11.	श्री परमेश्वर दयाल शर्मा	चौकीदार (तदर्थ)	28.9.87

10. स्थानान्तरण

सत्र 1987-88 के दौरान निम्नांकित कर्मचारियों के स्थानान्तरण हुए:-

क्र.सं.	नाम	पद	स्थान
1.	डा0 रामसागर मिश्र	व्याख्याता	जयपुर से लखनऊ विद्यापीठ

2.	श्री जगजीत लाल भारतीय	सहायक	इलाहाबाद से जयपुर विद्यापीठ
3.	श्री दीवान चन्द्र	अ.अ.	गुरूवायुर से जयपुर विद्यापीठ
4.	डा0 कमलनयन शर्मा	प्रवाचक	पुरी से जयपुर विद्यापीठ

केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ, लखनऊ

केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ, लखनऊ का प्रशासनिक और शैक्षणिक कार्य 2.8.86 को शुरू हुआ था। कृषि मंत्री श्री नगेन्द्र सिंह उसके मुख्य अतिथि थे। श्रीमती शीला कौल-लोकसभा सदस्य और शिक्षा राज्य मंत्री भारत सरकार ने इस समारोह की अध्यक्षता की। तब से यह विद्यापीठ कार्य करता रहा है। प्रवेश संबंधी विवरण इस प्रकार है:-

प्राकशास्त्री		8
शास्त्री		19
आचार्य		38
शिक्षाशास्त्री		63
विद्यावारिधि		4
		132

छात्रवृत्ति पाने वाले छात्रों का विवरण इस प्रकार है-

प्राकशास्त्री - प्रथम वर्ष		6
शास्त्री - प्रथम वर्ष		14
" द्वितीय वर्ष		2
आचार्य-प्रथम वर्ष	साहित्य	5
	व्याकरण	4
	अद्वैतवेदांत	4
आचार्य-द्वितीय वर्ष	बौद्ध दर्शन	7
	साहित्य	2

शिक्षाशास्त्री	28
विद्यावारिधि	7
कुल	79

छात्रावास की सुविधा पाने वाले छात्रों का विवरण इस प्रकार है:-

शिक्षाशास्त्री	11
आचार्य	1
कुल	12

विचार गोष्ठी और विस्तार भाषण

क्र.सं.	दिनांक	कार्यक्रम तथा भाषण विषय	प्रमुख वक्ता
1.	16.9.87	विचार गोष्ठी व विस्तार भाषण	1. डा. विश्वनारायण शास्त्री, गोहाटी 2. डा0 चक्रधर विजलवान, लखनऊ
2.	5.10.87	विचार गोष्ठी (सौन्दर्य-शास्त्र)	डा0कृष्णमोहन चतुर्वेदी दिल्ली
3.	4.12.87	विचार गोष्ठी (संस्कृत की उपादेयता तथा रत्नावली का मंचन)	1. प्रो. शीतलाप्रसाद नगेन्द्र, लखनऊ 2. श्री मदनमोहन मनुज लखनऊ 3. श्री एस.पी.कोहल लखनऊ 4. डा.सत्यव्रत सिंह लखनऊ 5. डा.नवजीवन रस्तोगी लखनऊ

4.	12·3·88	विशेष भाषण और गोष्ठी	6. डा·वीरभद्र मिश्र, लखनऊ श्री सुनील शास्त्री लखनऊ
	13·3·88	धार्मिक सहिष्णुता के विकास में संस्कृत की प्रासंगिकता	2. प्रो·जगदीश प्रसाद सिन्हा, लखनऊ
		(क) मदनमोहनमालवीय स्मारक विस्तार भाषण व विचार गोष्ठी	3. प्रो· रामचन्द्र द्विवेदी, जयपुर 4. प्रो·रेवाप्रसाद द्विवेदी, वाराणसी
		(ख) गोविन्दवल्लभपन्त स्मारक भाषण और विचार गोष्ठी	5. श्री शम्भूनाथ, पी·एस·, लखनऊ राज्यपाल उ·प्र·
		(ग) गोपीनाथ कविराज स्मारिका गोष्ठी तथा साहित्यिक प्रतियोगिता	प्रो·सत्यव्रत सिंह, लखनऊ
5.	21·3·88	विचार गोष्ठी (आधुनिक संस्कृत साहित्य (भगवदज्जुकीयम नाटक का मंचन)	1. प्रो·विद्यानिवास मिश्र, वाराणसी 2. डा·चक्रधर बिजलवान, वाराणसी
		वार्षिक समारोह (छात्रों को पुरस्कार वितरण समारोह व भाषण)	1. प्रो·करुणापति त्रिपाठी, वाराणसी 2. श्री मधुकर द्विवेदी लखनऊ

(ब) कार्यालय स्टॉफ

क्र·सं·	नाम व पद	नियुक्ति की तिथि
1.	श्री राघवेन्द्र नाथ त्रिपाठी- सहायक पुस्तकालयाध्यक्ष ग्रेड - II	19·11·87

2.	श्री राजेश कुमार मिश्र - क·श्रे·लि·	12·10·87
3.	श्रीमती उर्मिला तिवारी, क·श्रे·लि·	12·10·87
4.	श्री गुरू प्रसाद, लाईब्रेरी एटेंडेंट	12·10·87
5.	श्री कन्हैया लाल, ग्रुप डी (चपरासी)	15·10·87
6.	श्री रामबदन राम, ग्रुप डी (चपरासी)	12·10·87
7.	श्री महेश चन्द्र शर्मा चौकीदार	1·12·88
8.	श्री मुकेश कुमार सफाई कर्मचारी	13·10·87

नियुक्तियाँ

(अ) एकेडैमिक स्टॉफ

क्र·सं·	नाम व पद	नियुक्ति की तिथि
1.	डा0 इन्द्रदेव द्विवेदी, रीडर (साहित्य	19·8·87
2.	श्री लक्ष्मी निवास पाण्डेय, प्रवक्ता-प्रशिक्षण विभाग	15·7·87
3.	श्री लोकमान्य मिश्र, प्रवक्ता-प्रशिक्षण विभाग	15·7·87
4.	श्री सोहनलाल पाण्डेय, प्रवक्ता-प्रशिक्षण विभाग	15·7·87
5.	डा0 (श्रीमती (सविता पाठक, प्रवक्ता व्याकरण	15·7·87
6.	श्री गणेन्द्र प्रकाश शर्मा, निदेशक, शारीरिक प्रशिक्षण	20·7·87
7.	श्री बटोही डा, प्रवक्ता (साहित्य)	23·7·87
8.	डा0जी·एस·आर·कृष्णमूर्ति, प्रवक्ता साहित्य	31·7·87
9.	श्री एम·चन्द्रशेखर, प्रवक्ता प्रशिक्षण विभाग	31·7·87
10.	डा0 विजयकुमार जैन, प्रवक्ता (बौद्ध दर्शन)	5·10·87

हस्तांतरण:-

क्र·सं·	नाम व पद	विद्यापीठ में ज्वाइनिंग तिथि
1.	डा·आजाद मिश्रा, रीडर व्याकरण	4·4·87

2. डा.रामसागर मिश्र, व्याख्याता व्याकरण 6.5.87

शिक्षणेतर गतिविधियाँ:

विद्यापीठ में अप्रैल 87 से मार्च 88 तक निम्नलिखित गतिविधियों का आयोजन किया गया-

§1§ राष्ट्रीय सेवा योजना - इस योजना के अंतर्गत हमारे विद्यापीठ के छात्रों ने श्रमदान किया और अपने क्षेत्र की सफाई करने में हाथ बटाया।

§2§ खेलों का आयोजन- विद्यापीठ द्वारा कब्बडी,बैडमिन्टन और बालीबाल के मैच आयोजित किये गये जिसमें लखनऊ के कई महाविद्यालयों के छात्रों ने भी भाग लिया।

§3§ काव्य गोष्ठियाँ और सांस्कृतिक कार्यक्रम- विद्यापीठ द्वारा अनेक अवसरों पर काव्यगोष्ठियाँ, शास्त्र चर्चा गोष्ठियाँ एवं नृत्यसंगीत आदि के कार्यक्रमों का सफल आयोजन किया गया ।

§4§ नाट्य प्रस्तुतियाँ- विद्यापीठ द्वारा रत्नावली नाटिका और भगवद् याज्जुकीयम का भी मंचन किया गया।

§5§ अन्य संस्थाओं से सहयोग- विद्यापीठ के छात्रों की टोलियों को अन्य साहित्यिक शैक्षिकीय एवं सांस्कृतिक संस्थायें आमंत्रित करती रही हैं और इस विद्यापीठ के कार्यक्रमों को अन्य संस्थाओं के मंचों से प्रस्तुत किया जाता रहा है।

प्रकाशन

विद्यापीठ कतिपय प्रकाशन योजनाओं पर कार्य कर रहा है किन्तु समुचित साधनों के अभाव के कारण 1987-88 में कोई ग्रन्थ प्रकाशित नहीं किया जा सका।

अन्य सूचनायें

§1§ विद्यापीठ ने अपनी सांस्कृतिक साहित्यिक और शैक्षणिक गति-विधियों से लखनऊ में संस्कृत के प्रति जनरुचि बढ़ाने में सफलता प्राप्त की।

§2§ माध्यमिक कक्षाओं में संस्कृत को अनिवार्य विषय के रूप में निर्धारित करवाने के लिये विद्यापीठ ने स्थानीय संस्थाओं और संस्कृत प्रेमियों के सम्मेलन आयोजित किये तथा उ0प्र0 सरकार से एतदर्थ निवेदन किया।

§3§ परम्परागत संस्कृत शिक्षा के क्षेत्र में जो कतिपय कठिनाइयाँ या विसंगतियाँ उत्पन्न हो गई हैं उनके निराकरण के लिये विद्यापीठ ने गोष्ठियाँ आयोजित कीं।

§4§ संस्कृत के शिक्षकों को संस्कृत शिक्षण की नई तकनीकों से परिचित करानें के लिये विद्यापीठ ने प्रशिक्षण गोष्ठियों का आयोजन किया।

§5§ बच्चों और वृद्धों में संस्कृत के अध्ययन के प्रति रुचि जागृत करने के लिये विद्यापीठ ने विशेष संस्कृत शिक्षण सूत्रों का प्रात: एवं सायंकाल आयोजन किया ।

§6§ लखनऊ के विभिन्न कार्यालयों में सेवारत लोगों में संस्कृत के प्रति रुचि जागृत करने के लिये सरल संस्कृत शिविरों का आयोजन किया गया ।

उपर्युक्त रूप से इस विद्यापीठ की स्थापना लखनऊ में संस्कृत के प्रचार-प्रसार के जिस महत्वपूर्ण उद्देश्य से की गई है उसकी पूर्ति करने का इस विद्यापीठ द्वारा यथासम्भव प्रयास किया गया है।